

बदलते आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

१विजय कुमार, २डॉ. योगेश कुमार

१शोधार्थी, कला विभाग, मानविकी संकाय

मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

२मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

सार

आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं, जो आर्थिक विकास, शिक्षा के प्रसार, तकनीकी प्रगति, कानूनी सुधारों और सामाजिक चेतना के बढ़ने का प्रत्यक्ष परिणाम हैं। यह अध्ययन बदलते सामाजिक परिवृश्य में महिलाओं की स्थिति, अधिकारों, भूमिकाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषणात्मक परीक्षण प्रस्तुत करता है। यद्यपि महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार, राजनीति, विज्ञान, उद्यमिता तथा निर्णय-निर्माण के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी लैंगिक असमानता, पितृसत्ता, घरेलू हिंसा, वेतन-अंतराल, सामाजिक रूढ़ियाँ और कार्य-जीवन संतुलन जैसे मुद्दे अब भी बाधक बने हुए हैं। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि आधुनिकता ने महिलाओं की भूमिका को किस प्रकार प्रभावित किया है तथा वर्तमान चुनौतियों के बीच सशक्तिकरण की प्रक्रियाएँ कैसे विकसित हो रही हैं। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों—पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों—पर आधारित है। निष्कर्षतः, यह स्पष्ट होता है कि परिवर्तन की गति तेज है, लेकिन समानता और गरिमा पूर्ण सामाजिक स्थिति सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। यह शोध नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे महिलाओं की वास्तविक प्रगति को अधिक प्रभावी ढंग से समझा जा सके।

कीवर्ड्स - महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, सामाजिक परिवर्तन, पितृसत्ता, आधुनिक समाज

1. परिचय

मानव सभ्यता के विकास क्रम में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है, किंतु सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराओं और पितृसत्तात्मक मूल्यों के कारण महिलाओं की स्थिति लंबे समय तक द्वितीयक स्तर पर सीमित रही। आधुनिक युग में, विशेषकर 20वीं और 21वीं सदी में, वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार, सूचना-प्रौद्योगिकी की प्रगति और मानवाधिकार चेतना के क्षेत्र में बढ़ती जागरूकता ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। बदलते सामाजिक परिवेश ने न केवल महिलाओं को अधिक अवसर प्रदान किए हैं, बल्कि उनकी पारंपरिक भूमिकाओं, अधिकारों और सामाजिक पहचान को पुनर्परिभाषित भी किया है।

आज महिलाएँ घर, परिवार, समुदाय और कार्यस्थलों पर बहुआयामी भूमिकाएँ निभा रही हैं। शिक्षा तक पहुँच बढ़ने से वे अधिक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और निर्णय लेने में सक्षम हुई हैं। रोजगार के नए अवसरों ने उन्हें आर्थिक शक्ति प्रदान की है, जिससे सामाजिक संरचना में उनके प्रभाव और स्थान में वृद्धि हुई है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी-चाहे वह पंचायत-स्तर का प्रतिनिधित्व हो या राष्ट्रीय स्तर की नेतृत्वकारी भूमिकाएँ-उनकी बढ़ती पहचान और क्षमता का प्रमाण है। मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्म ने महिलाओं को आवाज़ देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है, जिससे सामाजिक मुद्दों पर उनकी भागीदारी बढ़ी है।

इसके बावजूद, कई चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं। पितृसत्ता की गहरी जड़ें, सामाजिक रूढ़ियाँ, दहेज, लिंग आधारित हिंसा, घरेलू अत्याचार, कार्यस्थल पर भेदभाव, वेतन अंतराल, तथा परिवार और करियर के बीच संतुलन की कठिनाइयाँ महिलाओं की प्रगति में बाधक बनी हुई हैं। ग्रामीण-शहरी, शिक्षा-अशिक्षा तथा आर्थिक असमानताओं के कारण महिलाओं की स्थिति में विभिन्नताएँ भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा जारी रिपोर्टें के अनुसार, लैंगिक समानता सतत विकास का प्रमुख स्तंभ है। भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि यह न केवल समाज की प्रगति को प्रभावित करता है, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र की मानव-विकास क्षमता को भी निर्धारित करता है।

बदलते आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका परिवार-केन्द्रित से बाहर निकलकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में विस्तृत हो चुकी है। महिलाओं की आत्म-पहचान और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है, और वे पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देते हुए नए अवसरों के द्वारा खोल रही हैं। यह अध्ययन इसी परिवर्तनशील प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिकता ने महिलाओं के जीवन और सामाजिक स्थिति को कैसे प्रभावित किया है। अतः यह आवश्यक है कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण केवल उनके उपलब्धियों तक सीमित न रहे, बल्कि उन संरचनात्मक बाधाओं की भी पहचान करे जो समानता की दिशा में प्रगति को धीमा करती हैं। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत यह शोध बदलते सामाजिक परिवेश में महिलाओं की स्थिति का व्यापक और विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है।

2. साहित्य की समीक्षा:

बोस (2010) ने अपने अध्ययन में कहा कि शिक्षा महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है। शिक्षित महिलाएँ न केवल आत्मनिर्भर बनती हैं, बल्कि सामाजिक निर्णय प्रक्रियाओं में भी अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं।

नंदा (2014) के शोध के अनुसार, पितृसत्तात्मक समाजों में आधुनिकता के बावजूद महिलाओं को समान अवसर नहीं मिल पाते। आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव अभी भी व्यापक है।

कौर और शर्मा (2016) ने ग्रामीण और शहरी महिलाओं की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि शहरी महिलाओं में जागरूकता और अवसर अधिक हैं लेकिन दोनों वर्गों में लैंगिक हिंसा एक प्रमुख समस्या है।

यूनिसेफ (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, डिजिटल शिक्षा और तकनीकी कौशल ने महिलाओं को नए अवसर उपलब्ध कराए हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन अभी भी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

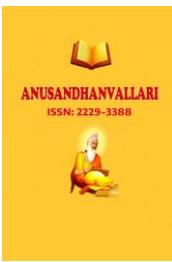
भारतीय सामाजिक विज्ञान संस्थान (2022) के शोध में यह निष्कर्ष निकला कि सरकारी योजनाओं-बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, महिला हेल्पलाइन-के कारण महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आए हैं, लेकिन इनकी पहुँच और क्रियान्वयन में सुधार की आवश्यकता है।

3. अध्ययन का उद्देश्य:

- आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए प्रमुख परिवर्तनों की पहचान करना।
- शिक्षा, रोजगार, राजनीति और परिवारिक संरचना में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।
- महिलाओं के सामने मौजूद सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों की जांच करना।
- लैंगिक समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाली नीतियों, कार्यक्रमों और कानूनों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- भविष्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक उपायों और रणनीतियों का सुझाव देना।

4. शोध पद्धति :

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अनुसंधान के लिए पुस्तकों, जर्नल लेखों, ई-स्रोतों, सरकारी रिपोर्टों, राष्ट्रीय सर्वेक्षणों (NFHS, NSSO), सामाजिक संस्थाओं की रिपोर्टों तथा विश्वसनीय शोध डेटाबेस का उपयोग किया गया। द्वितीयक डेटा संग्रह का उद्देश्य व्यापक और विविध दृष्टिकोण प्राप्त करना है ताकि महिलाओं की सामाजिक स्थिति में हो रहे परिवर्तन का बहुआयामी विश्लेषण किया जा सके। सामग्री के विश्लेषण के लिए विवरणात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति अपनाई गई है। चुने गए साहित्य, नीति दस्तावेजों और सांछिकीय रिपोर्टों की तुलना करके वर्तमान स्थिति तथा परिवर्तनशील प्रवृत्तियों की पहचान की गई है। अध्ययन के दौरान विभिन्न अवधारणाओं-पितृसत्ता, लैंगिक समानता, सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन-का सिद्धांतात्मक आधार भी समीक्षा के माध्यम से स्थापित किया गया है। यह अनुसंधान किसी भी प्राथमिक डेटा संग्रह पर आधारित नहीं है, इसलिए इसके निष्कर्ष द्वितीयक स्रोतों की



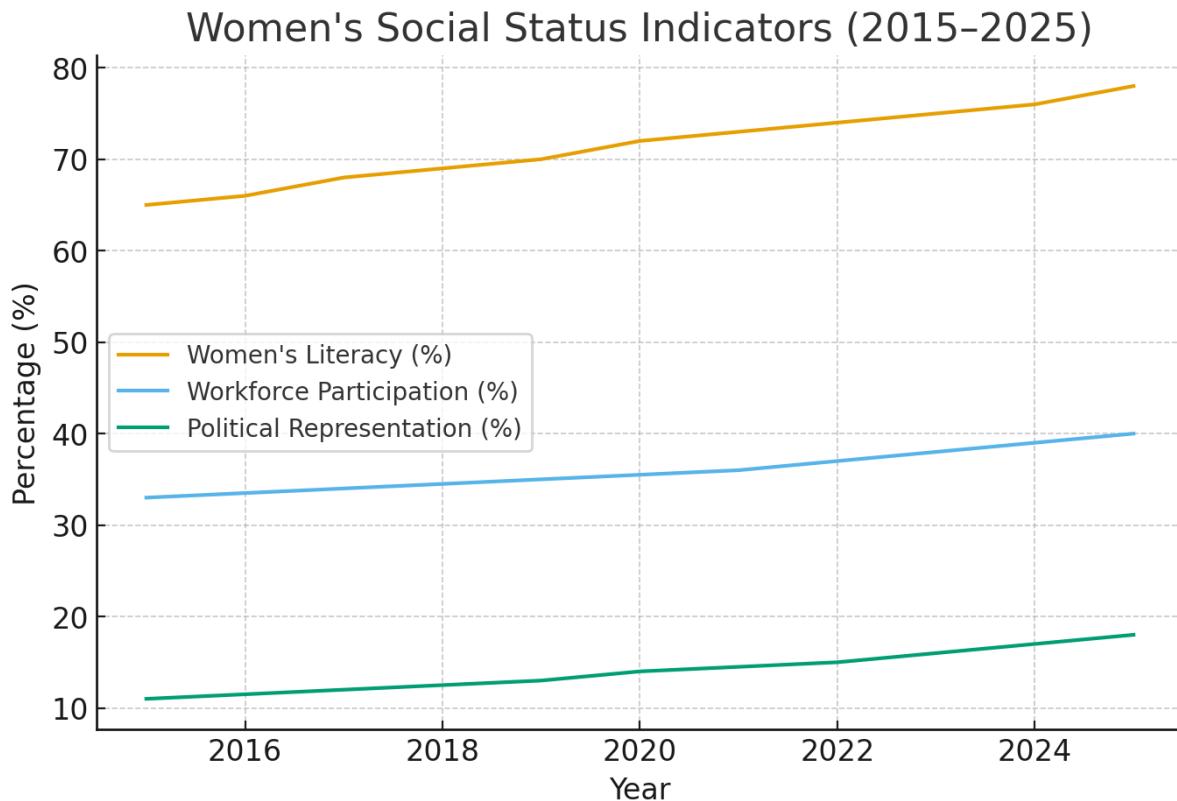
विश्वसनीयता पर निर्भर हैं। इसके बावजूद, उपलब्ध साहित्य का व्यवस्थित विश्लेषण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार और चुनौतियों की स्पष्ट समझ प्रदान करता है।

5. बदलते आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। शिक्षा के प्रसार, तकनीकी विकास, आर्थिक अवसरों के विस्तार और कानूनी सुधारों ने महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता, अधिकार और आत्मनिर्भरता प्रदान की है। अब महिलाएँ पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विज्ञान, राजनीति, प्रशासन, उद्यमिता और विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इसके बावजूद पिरुसत्तात्मक संरचना, लैंगिक भेदभाव, वेतन-अंतराल, घरेलू हिंसा और सामाजिक रूढ़ियाँ अब भी कई बाधाएँ खड़ी करती हैं। ग्रामीण-शहरी और सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बीच असमानता भी स्पष्ट रूप से दिखती है। समग्र रूप से, आधुनिकता ने महिलाओं को सशक्त होने के नए अवसर प्रदान किए हैं, परंतु वास्तविक समानता के लिए सामाजिक मानसिकता, शिक्षा और नीतिगत समर्थन में निरंतर सुधार आवश्यक है। महिलाओं का सशक्तिकरण न केवल व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग है बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास का आधार भी है।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति – 2015 से 2025

| वर्ष | महिला साक्षरता (%) | कार्यबल भागीदारी (%) | राजनीतिक प्रतिनिधित्व (%) | उच्च शिक्षा नामांकन (%) | डिजिटल साक्षरता (%) |
|------|--------------------|----------------------|---------------------------|-------------------------|---------------------|
| 2015 | 65 | 33 | 11 | 22 | 18 |
| 2016 | 66 | 33.5 | 11.5 | 23 | 21 |
| 2017 | 68 | 34 | 12 | 24.5 | 25 |
| 2018 | 69 | 34.5 | 12.5 | 26 | 29 |
| 2019 | 70 | 35 | 13 | 27.2 | 33 |
| 2020 | 72 | 35.5 | 14 | 29 | 38 |
| 2021 | 73 | 36 | 14.5 | 31 | 44 |



ग्राफ रक्षा व्यय और शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा पर सामाजिक क्षेत्र के खर्च के बीच नकारात्मक संबंध को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे रक्षा बजट बढ़ता है, आवश्यक कल्याणकारी क्षेत्रों के लिए उपलब्ध धनराशि का अनुपात घटता जाता है। यह प्रवृत्ति अवसर लागत की आर्थिक अवधारणा को दर्शाती है, जहाँ सैन्य आवश्यकताओं के लिए अधिक संसाधन आवंटित रने से मानव विकास में निवेश करने की सरकार की क्षमता कम हो जाती है। यह चित्रण इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे बढ़ता रक्षा खर्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य सेवा और समग्र सामुदायिक कल्याण में निवेश को सीमित करके दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक प्रगति को बाधित कर सकता है। ऐसे समझौते विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जहाँ सामाजिक क्षेत्र गरीबी उन्मूलन और मानव पूँजी निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, यह ग्राफ आधारभूत सार्वजनिक सेवाओं को कमज़ोर किए बिना राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संतुलित बजट और रणनीतिक नीतिगत निर्णयों के महत्व पर ज़ोर देता है। यह नीति निर्माताओं को ऐसे स्थायी दृष्टिकोण अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित करता है जो सुरक्षा हितों और मानव विकास प्राथमिकताओं, दोनों की रक्षा करें।

i. आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए प्रमुख परिवर्तन

आधुनिक भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तन एक क्रांतिकारी प्रक्रिया का प्रतिबिंब हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम से प्रारंभ होकर वैश्वीकरण और डिजिटल युग तक फैली हुई है। प्राचीन काल में महिलाओं को उच्च दर्जा प्राप्त था, जैसे वेदों में विदुषी कन्याओं का सम्मान, लेकिन मध्यकालीन काल में पर्दा प्रथा, सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों ने उनकी स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। स्वतंत्रता के बाद, संवैधानिक प्रावधानों जैसे अनुच्छेद 14 और 15 ने लैंगिक समानता की नींव रखी, जिससे महिलाओं का सामाजिक उत्थान प्रारंभ हुआ।

20वीं सदी के उत्तरार्ध में, शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने प्रमुख भूमिका निभाई। 1950 के दशक में महिला साक्षरता दर मात्र 8.86% थी, जो 2021 तक बढ़कर 70.3% हो गई, जिससे महिलाएं विज्ञान, कला, खेल और व्यापार में योगदान दे रही हैं। आर्थिक रूप से, महिला श्रम भागीदारी 2023 में 37% तक पहुंची, जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्वावलंबन को बढ़ावा दे रही है। राजनीतिक स्तर पर, 73वें संशोधन ने पंचायतों में 33% आरक्षण सुनिश्चित किया, जिससे लाखों महिलाएं स्थानीय शासन में सक्रिय हुई। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल और प्रधानमंत्री पद पर इंदिरा गांधी जैसी उपलब्धियां इस परिवर्तन का प्रतीक हैं। सांस्कृतिक परिवर्तन भी उल्लेखनीय हैं। मीडिया और सोशल मीडिया ने महिलाओं को आवाज दी, जैसे #MeToo आंदोलन ने यौन उत्पीड़न के खिलाफ जागरूकता फैलाई। वैश्वीकरण ने पश्चिमी मूल्यों को अपनाने में मदद की, लेकिन ग्रामीण-शहरी विभेद बरकरार है। आधुनिक युग में महिलाएं अब केवल गृहिणी नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता हैं, जो पर्यावरण, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में योगदान दे रही हैं। हालांकि, ये परिवर्तन असमान हैं; शहरी महिलाओं में प्रगति तेज है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कुरीतियां बाकी हैं। कुल मिलाकर, ये बदलाव महिलाओं को सामाजिक मुख्यधारा में लाने वाले हैं, जो राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को मजबूत कर रहे हैं।

ii. शिक्षा, रोजगार, राजनीति और परिवारिक संरचना में महिलाओं की भूमिका

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी है, जो शिक्षा, रोजगार, राजनीति और परिवारिक संरचना में परिवर्तनकारी सिद्ध हो रही है। शिक्षा क्षेत्र में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने लैंगिक समानता पर जोर दिया, जिससे उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी 49% तक पहुंच गई। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना ने लड़कियों की नामांकन दर को 93% से ऊपर ले जाकर उन्हें सशक्त बनाया, जो परिवार और समाज में निर्णय लेने की क्षमता बढ़ा रही है। रोजगार में, महिला श्रम भागीदारी 2025 तक 41.7% हो गई, लेकिन असंगठित क्षेत्र में 80-90% महिलाएं कार्यरत हैं, जहां कम वेतन और असुरक्षा चुनौतियां हैं। स्टार्टअप इंडिया ने महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित किया, जो 2030 तक 150-170 मिलियन नौकरियां पैदा करेंगी। STEM क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, जो आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित कर रही है। राजनीति में, नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 ने लोकसभा और विधानसभाओं में 33% आरक्षण प्रदान किया, जिससे महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा। स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित होकर, आज महिलाएं निर्णय-निर्माण में सक्रिय हैं, जैसे पंचायती राज में 50% आरक्षण। हालांकि, उच्च पदों पर पुरुष वर्चस्व बरकरार है। परिवारिक संरचना में, महिलाएं अब संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर परिवार की ओर बढ़ रही हैं, जहां वे मुख्य

कमाने वाली बन रही हैं। अवैतनिक घरेलू कार्य का बोझ कम हो रहा है, लेकिन सांस्कृतिक अपेक्षाएं बनी हुई हैं। ये भूमिकाएं महिलाओं को सशक्त बनाते हुए समाज को संतुलित कर रही हैं, लेकिन लैंगिक विभाजन को दूर करने की आवश्यकता है। कुल मिलाकर, महिलाएं विकास की मुख्यधारा में हैं, जो समावेशी समाज का निर्माण कर रही हैं।

iii. महिलाओं के सामने मौजूद सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियां

भारतीय महिलाओं के समक्ष सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियां बहुआयामी हैं, जो उनकी प्रगति को बाधित करती हैं। सामाजिक स्तर पर, घरेलू हिंसा प्रमुख समस्या है, जहां 30% महिलाएं शारीरिक या यौन शोषण का शिकार हैं। दहेज, बाल विवाह और लिंग भेदभाव ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित हैं, जबकि शहरीकरण ने यौन उत्पीड़न (#MeToo) जैसी नई चुनौतियां जन्म दीं। वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक 2023 में भारत 127वें स्थान पर है। आर्थिक चुनौतियां समान रूप से गंभीर हैं। महिला श्रम भागीदारी कम (25-30% ग्रामीण में) होने से आर्थिक निर्भरता बनी रहती है। असंगठित क्षेत्र में 90% महिलाओं को न्यून वेतन, कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलती। कुपोषण और एनीमिया 51% किशोरियों को प्रभावित करता है, जो स्वास्थ्य और उत्पादकता को कमजोर करता है। महामारी के दौरान रोजगार हानि ने असमानता बढ़ाई।

सांस्कृतिक चुनौतियां गहरी जड़ें रखती हैं। पितृसत्तात्मक मान्यताएं महिलाओं को 'कमजोर' मानती हैं, जिससे शिक्षा और रोजगार में बाधा आती है। मीडिया द्वारा स्टीरियोटाइपिंग (सौंदर्य केंद्रित) आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। ग्रामीण-शहरी विभेद में, आदिवासी महिलाएं सबसे वंचित हैं। ये चुनौतियां परस्पर जुड़ी हैं; सामाजिक भेदभाव आर्थिक अवसरों को सीमित करता है, जबकि सांस्कृतिक रूद्धियां हिंसा को सामान्य बनाती हैं। इनकी जांच से स्पष्ट है कि जागरूकता और कानूनी क्रियान्वयन आवश्यक है। हालांकि प्रगति हो रही है, लेकिन समग्र समाधान के बिना सशक्तिकरण अधूरा रहेगा।

iv. लैंगिक समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाली नीतियों, कार्यक्रमों और कानूनों की प्रभावशीलता

भारत में लैंगिक समानता के लिए नीतियां, कार्यक्रम और कानूनों का जाल बिछा है, लेकिन उनकी प्रभावशीलता मिश्रित है। संवैधानिक स्तर पर, अनुच्छेद 15 भेदभाव निषेध करता है, जबकि नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 ने राजनीतिक आरक्षण सुनिश्चित किया, जिससे पंचायतों में 50% महिलाएं सक्रिय हुईं। यह प्रभावी सिद्ध हुआ, क्योंकि महिलाओं का निर्णय-निर्माण बढ़ा। कार्यक्रमों में, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) ने लिंग अनुपात सुधारकर 930:1000 किया, लेकिन ग्रामीण क्रियान्वयन कमजोर है। POSHAN अभियान ने कुपोषण कम किया, लेकिन एनीमिया दर 45% बनी हुई है। लैंगिक बजट 2024 में 2.5 लाख करोड़ आवंटित, जो STEM में महिलाओं को बढ़ावा दे रहा है। कानूनों की बात करें, घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 और POCSO 2012 ने सुरक्षा प्रदान की, लेकिन कार्यान्वयन में देरी (केवल 20% मामलों में सजा) कमजोरी दर्शाती है। तीन तलाक कानून 2019 ने मुस्लिम महिलाओं को राहत दी, लेकिन

सांस्कृतिक प्रतिरोध बरकरार है। सतत विकास लक्ष्य-5 (SDG-5) के तहत 14 संकेतक ट्रैक किए जा रहे हैं, लेकिन भारत का रेंक 127वां है। मूल्यांकन से स्पष्ट है कि ये उपाय जागरूकता बढ़ा रहे हैं, लेकिन ग्रामीण पहुंच, भ्रष्टाचार और लैंगिक पूर्वग्रिह कार्यान्वयन को प्रभावित करते हैं। प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए निगरानी और जेंडर इम्पैक्ट बॉण्ड जैसे नवाचार आवश्यक हैं। कुल मिलाकर, ये नीतियां प्रगति की दिशा में हैं, लेकिन पूर्ण समानता दूर है।

V. भविष्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक उपायों और रणनीतियों

भविष्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत करने के लिए बहुस्तरीय उपाय और रणनीतियां अपनानी होंगी। प्रथम, शिक्षा को आधार बनाएँ: NEP 2020 को मजबूत कर ग्रामीण लड़कियों के लिए डिजिटल शिक्षा और छात्रवृत्तियां बढ़ाएं, जिससे साक्षरता 100% हो। दूसरा, आर्थिक सशक्तिकरण: स्किल इंडिया को लैंगिक संवेदनशील बनाकर 50% महिला भागीदारी सुनिश्चित करें, साथ ही माइक्रोफाइनेंस से उद्यमिता को प्रोत्साहन दें। राजनीतिक स्तर पर, आरक्षण को 50% तक बढ़ाएं और महिला नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाएं। सामाजिक जागरूकता के लिए मीडिया अभियान (#SheCan) और स्कूल पाठ्यक्रम में लैंगिक समानता शामिल करें, जो पितृसत्तात्मक मान्यताओं को चुनौती दें। कानूनी सुधारों में, हिंसा विरोधी कानूनों का कड़ाई से क्रियान्वयन करें, विशेष अदालतें स्थापित करें। स्वास्थ्य के लिए, मातृ स्वास्थ्य कार्यक्रमों को विस्तार दें, एनीमिया उन्मूलन पर फोकस करें। सांस्कृतिक रणनीति: NGO और समुदाय भागीदारी से कुरीतियों का उन्मूलन, जैसे दहेज-मुक्त विवाह प्रोत्साहन। समग्र रणनीति: मॉनिटरिंग के लिए डेटा-आधारित दृष्टिकोण अपनाएं, SDG-5 को एकीकृत करें। पुरुषों को सहयोगी बनाकर 'हिंसा मुक्त समाज' का निर्माण करें। ये उपाय 2030 तक लैंगिक समानता सुनिश्चित करेंगे, महिलाओं को राष्ट्र निर्माण का अभिन्न अंग बनाएंगे।

6. निष्कर्ष और सुझाव

बदलते आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आया परिवर्तन एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का संकेत है। महिलाएँ आज शिक्षा, रोजगार, राजनीति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कला के क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कर रही हैं। उनकी आर्थिक और सामाजिक भागीदारी बढ़ने से न केवल परिवार की संरचना में परिवर्तन आया है, बल्कि सामाजिक विकास की गति भी तीव्र हुई है। फिर भी, यह परिवर्तन समान रूप से हर वर्ग या क्षेत्र में नहीं पहुँच पाया है। सामाजिक मानसिकता, पितृसत्ता, रूढ़िवाद, लैंगिक हिंसा, वेतन-अंतराल, कार्य-जीवन संतुलन की चुनौती और डिजिटल असमानता महिलाओं की प्रगति में बाधक बनी हुई हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों और निम्न आय वर्ग की महिलाओं की स्थिति अभी भी अपेक्षाकृत कमज़ोर है। कानूनी और नीतिगत स्तर पर कई सुधार हुए हैं, जिन्होंने महिलाओं को शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों और अवसरों तक अधिक पहुँच प्रदान की है। इसके बावजूद

इन नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन की कमी कई बार उनके वास्तविक लाभ को सीमित कर देती है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक समाज महिलाओं को नई संभावनाएँ तो प्रदान कर रहा है, लेकिन समानता सुनिश्चित करने के लिए अभी भी लंबा रास्ता तय करना बाकी है। महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक मानसिकता का परिवर्तन, परिवारिक समर्थन, शिक्षा और स्वतंत्र निर्णय-निर्माण की क्षमता भी शामिल है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसे सामाजिक संवेदना, नीतिगत प्रतिबद्धता और सामूहिक प्रयासों द्वारा ही और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

सुझाव

- शिक्षा और कौशल विकास को प्राथमिकता: ग्रामीण और हाशिये पर रहने वाली महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और तकनीकी-कौशल प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ। डिजिटल साक्षरता को विशेष महत्व दिया जाए ताकि वे आधुनिक अर्थव्यवस्था में समुचित भागीदारी कर सकें।
- कानूनी जागरूकता और अधिकार संरक्षण: महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों—घरेलू हिंसा अधिनियम, कार्यस्थल उत्पीड़न-निरोधक कानून, संपत्ति-अधिकार—की जानकारी देने के लिए नियमित जागरूकता अभियान चलाए जाएँ। हेल्पलाइन और सहायता केंद्रों की पहुँच बढ़ाई जाए।
- रोजगार और आर्थिक अवसरों का विस्तार: महिलाओं के लिए सुरक्षित कार्य-परिवेश, समान वेतन, मातृत्व लाभ और लचीले कार्य-घंटे सुनिश्चित किए जाएँ। महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए सरल ऋण योजनाएँ और मेंटरशिप कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
- सामाजिक मानसिकता परिवर्तन: पितृसत्तात्मक सोच और लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों, मीडिया और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से लैंगिक समानता आधारित दृष्टिकोण विकसित किया जाए। पुरुषों और लड़कों को भी लैंगिक-समानता अभियानों में शामिल किया जाए।
- सुरक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार: सार्वजनिक स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की जाए, CCTV और त्वरित पुलिस हस्तक्षेप सुनिश्चित किया जाए। महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सुविधा केंद्रों, विशेषकर मातृ स्वास्थ्य सेवाओं, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन और पोषण कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
- नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन: महिलाओं से संबंधित सरकारी योजनाओं—बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, महिला स्व-सहायता समूह, जननी सुरक्षा योजना—के कार्यान्वयन की नियमित समीक्षा की जाए ताकि अधिक पारदर्शिता और प्रभावशीलता सुनिश्चित की जा सके।
- इन सुझावों के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक स्थिति को और अधिक मजबूत, समानतापूर्ण और सशक्त बनाया जा सकता है, जिससे समाज के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

संदर्भः

- [1] देवी, सुषमा (2018). भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।
- [2] शर्मा, रेखा (2017). महिलाओं की सामाजिक स्थिति और परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ. जयपुर: आर.बी.एस. पब्लिशर्स।
- [3] मिश्रा, रागिनी (2019). भारतीय महिला और आधुनिकता: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. वाराणसी: ज्ञान भारती।
- [4] तिवारी, अंजना (2020). समकालीन भारतीय समाज में महिला की भूमिका. लखनऊ: अवध प्रकाशन।
- [5] कौशल, निर्मला (2016). लैंगिक समानता और महिला अधिकार. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- [6] सिंह, कविता (2021). नारीवाद और भारतीय महिला चिंतन. भोपाल: मध्यभारत साहित्य सदन।
- [7] गुप्ता, शुभा (2015). भारत में महिला शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. पटना: शारदा बुक हाउस।
- [8] जोशी, मधु (2022). महिला श्रम, अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिति का अध्ययन. दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
- [9] चतुर्वेदी, रुचि (2018). भारतीय महिला: परंपरा से आधुनिकता की ओर. जयपुर: राष्ट्रीय अकादमी।
- [10] यादव, प्रीति (2023). महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय की दिशा में प्रयास. गाजियाबाद: उन्नति प्रकाशन।
- [11] UNICEF. (2020). *Gender equality and girls' empowerment report*. United Nations Children's Fund.
- [12] Indian Council of Social Science Research. (2022). *Women's empowerment and policy impact assessment in India*. ICSSR Publications.
- [13] Government of India. (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5) Report*. Ministry of Health and Family Welfare.
- [14] World Economic Forum. (2023). *Global gender gap report 2023*. World Economic Forum.